

GM फसलें

GM फसलें क्या है ?

- जेनेटिक इंजीनियरिंग के ज़रिये किसी भी जीव या पौधे के जीन को अन्य पौधों में डालकर एक नई फसल प्रजाति विकसित की जाती
- जीएम फसल उन फसलों को कहा जाता है जिनके जीन को वैज्ञानिक तरीके से रूपांतरित किया जाता है।

GM फसलों के लाभ

- यह बीज साधारण बीज से कहीं अधिक उत्पादकता प्रदान करता है।
- इससे कृषि क्षेत्र की कई समस्याएँ दूर हो जाएंगी और फसल उत्पादन का स्तर सुधरेगा।
- जीएम फसलें सूखा-रोधी और बाढ़-रोधी होने के साथ कीट प्रतिरोधी भी होती हैं।
- जीएम फसलों की यह विशेषता होती है कि अधिक उर्वर होने के साथ ही इनमें अधिक कीटनाशकों की ज़रूरत नहीं होती।

जीएम फसलों के नुकसान

भारत में इन फसलों का वरीोध करने के कई कारण हैं...

- जीएम फसलों की लागत अधिक होती है, क्योंकि इसके लिये हर बार नया बीज खरीदना पड़ता है।
- बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के एकाधिकार के कारण किसानों को महँगे बीज और कीटनाशक उनसे खरीदने पड़ते हैं।
 - इस समय हाइब्रिड बीजों पर ज़ोर दिया जा रहा है और अधिकांश हाइब्रिड बीज (चाहे जीएम हों अथवा नहीं) या तो दोबारा इस्तेमाल लायक नहीं होते और अगर होते भी हैं तो पहली बार के बाद उनका प्रदर्शन बहुत अच्छा नहीं होता।
 - इसे स्वास्थ्य, पर्यावरण तथा जैव विविधता के लिये हानिकारक माना जाता है।
 - भारत में इस प्रौद्योगिकी का वरीोध करने वालों का कहना है कि हमारे देश में कृषि में काफी अधिक जैव विविधता है, जो जीएम प्रौद्योगिकी को अपनाने से खत्म हो जाएगी।

भारत में उपयोग की जा रही GM फसलें

BT कपास (एकमात्र उपयोग की जा रही GM फसल), GM सरसों, BT बैंगन (वविादति)।

वर्तमान संदर्भ

कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय (Ministry of Agriculture & Farmers Welfare) द्वारा लोकसभा में प्रस्तुत जानकारी के अनुसार, कृषि, सहकारिता और किसान कल्याण विभाग (Department of Agriculture, Cooperation and Farmers Welfare) ने राज्यों को BT बैंगन और HT कपास के प्रसार को न्यंत्रित करने के लिये निर्देश जारी किये हैं।

वविाद

- भारत में Bt कपास, जो कि एक GM फसल है, की शुरुआत काफी सफल कति वविादास्पद रही है। वर्ष 2002 में इसकी शुरुआत के बाद एक दशक में कपास का उत्पादन दुगुने से भी अधिक हो गया। लेकिन, इसी समय मूल्य निर्धारण एवं बौद्धिक संपदा अधिकारों के मुद्दे पर वविाद भी शुरू हो गया था।
- Bt-बैंगन के विकास के लिये 2005 में महिको (अमेरिकन कृषि बायोटेक कंपनी मोनसेंटो की भारतीय सहयोगी कंपनी) ने दो विश्वविद्यालयों के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किये। दो विशेषज्ञ समितियों द्वारा जैव सुरक्षा द्वारा और क्षेत्र परीक्षणों के अध्ययन के बाद Bt-बैंगन को भारत के शीर्ष बायोटेक्नोलॉजी नियामक जेनेटिक इंजीनियरिंग एप्रेजल कमेटी (GEAC) ने 2009 में इसके वाणिज्यिक उत्पादन की मंजूरी दे दी। लेकिन इसके बाद में भारी वरीोध को देखते हुए सरकार ने इसके उत्पादन को स्थगित कर दिया।
- GM सरसों का प्रयोग भी वविादास्पद बना हुआ है।

GM फसलों से सम्बंधति वविादों का समाधान -

- आनुवांशकि रूप से संशोधति सूक्ष्म जीवों और उत्पादों के कृषि में उपयोग को स्वीकृता प्रदान करने वाली जेनेटकि इंजीनयिरगि मूल्यांकन समति (GEAC) की शक्तियों बढ़ाई जाएँ तथा उसे नरिणय लेने हेतु और अधकि स्वायत्ता दी जाए ।
- जीएम फसलों को मंजूरी उनके सामाजकि-आर्थकि व स्वास्थय पर प्रभाव के मूल्यांकन के बाद ही दी जानी चाहयि ।
- GM फसलों को अपनाने वाले कृषकों के हतियों की रक्षा हेतु उचित नीतियों अपनाई जानी चाहयि ।

PDF Referenece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/gm-crops-4>

